JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आध्यात्मिक पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में अखण्ड ज्योति की पत्रकारिता

षोधार्थी– षरद तिवारी
निर्देषक–डॉ. अजय भारद्वाज
सह–निर्देषक– डॉ. कृश्णा झरे

सारांष–

हिन्दी की आध्यात्मिक पत्रकारिता के इतिहास में सम्पन्न होने वाले धार्मिक आन्दोलनों ने इस ओर महती भूमिका का निर्वाह किया। ब्रह्म समाज ने सुशुप्त भारत को जगाया तथा आर्य समाज ने भारतीय संस्कृति के अनुरूप स्वराज्य प्राप्ति के लिए मंत्र फूँका। रामकृश्ण मिषन और थियोसोफिकल सोसाइटी ने एकता, राश्ट्रप्रेम, देषाभिमान के भावों को जगाकर राश्ट्रीय निश्ठा को सुपुश्ट किया। सर वेलेन्टाइन षिरोल ने हिन्दू धर्म के पुनर्जागरण में राश्ट्रीयता की उत्पत्ति को देखा। राश्ट्रीय एवं मानवीय मूल्यों से संदर्भित हिन्दी पत्रकारिता ने देषवासियों की नस–नस में स्वतंत्रता, समानता और विष्व बन्धुत्व की भावना का संचार किया जो कि आदिकाल से सर्वश्रेश्ठ आदर्ष के रूप में भारतीय संस्कृति को गौरान्वित करता आ रहा है और वर्तमान में भी सारा विष्व समाज इसके लिए प्रयत्नषील है।

इस प्रकार स्पश्ट होता है कि आध्यात्मिक पत्रकारिता के स्थान, मूल एवं महत्व की तुलना पत्रकारिता के किसी अन्य स्वरूप से नहीं की जा सकती। हिन्दी पत्रकारिता के मूल में समाहित होकर आध्यात्मिक पत्रकारिता ने ही उसे सर्वोच्चता के षिखर पर पहुँचाया, परन्तु वर्तमान के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक संघर्शों के बीच इसे भी संघर्शमय विशमताओं से जूझना पड़ रहा है। आध्यात्मिक पत्रकारिता की बात तो अलग है, आज तो हिन्दी भाशा को ही अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़नी पड़ रही है। जैसा कि वरिश्ठ पत्रकार अभय दुबे ने संकेत किया है कि 'अचरज उस समय और बढ़ जायेगा जब पता चलेगा कि हिन्दी में बातचीत सिखाने का धन्धा एक स्विस बहुराश्ट्रीय कम्पनी कर रही है।[1] भारतीय जीवन में हिन्दी की स्थिति को दर्षाता उनका ये कथन वास्तव में आज और भविश्य के लिए सोचनीय है। इस सोचनीयता को पैदा करने वाले कारण पर प्रकाष डालते हुए लिखते हैं कि– 'यह हिन्दी सुनी जा सकती है, देखी जा सकती है, यह बिकती और खरीदी जाती है। यह बेचने में भी मदद करती है, लेकिन यह लिखी नहीं जाती और न ही पढ़ी जाती है।'[2] परिणामतः प्रियदर्षन के षब्दों में– 'इस दुनिया में जो हिन्दी दिखाई–सुनाई पड़ती है, वह अंग्रेजी के बौद्धिक चौखट में, उसके अनुवाद की कमीज से किसी तरह अटाई हुई हिन्दी होती है।[3] 'अखण्ड ज्योति' आध्यात्मिक पत्रकारिता के इसी औचित्य को प्रकट करने में संलग्न हैं।

कूट षब्द– पत्रकारिता, आध्यात्मिक, अखण्ड ज्योति।

(1) आध्यात्मिक पत्रकारिता की पृश्ठभूमि –

20वीं सदी के इतिहास में आध्यात्मिक पत्रकारिता का व्यापक विस्तार हुआ। विभिन्न धर्म सम्प्रदायों, मत–मतान्तरों के अपने अलग–अलग पत्र–पत्रिकायें निकलना प्रारम्भ हो गया। पं. अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने सन् 1907 में कलकत्ता से 'नृसिंह' मासिक का प्रकाषन व सम्पादन षुरू किया। इसमें हिरण्यकष्यपु और भक्त षिरोमणि प्रह्लाद की कथा के माध्यम से धर्म व कर्त्तव्य की व्याख्या की जाती थी। अखिल भारतीय ष्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस (नई दिल्ली) के तत्वाधान में प्रकाषित साप्ताहिक 'जैन प्रकाष' (1914) में जैन धर्म के सिद्धान्तों पर गवेशणापूर्ण सामग्री दी जाती रही और मांसाहार का विरोध तत्व प्राणीमात्र पर दया आदि विशयों पर लेख प्रकाषित होते रहे हैं। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने 1919 में स्वाध्याय मण्डल, पारड़ी में मासिक 'वैदिक धर्म' का सम्पादन व प्रकाषन प्रारम्भ किया जिसका उद्देष्य वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार था। इसमें वेदों का सरल भाश्य तथा वेदों व वैदिक ऋशियों पर सरल भाशा में लेख प्रकाषित होते थे। 1922 में अ. भा. दिगम्बर जैन परिशद् मेरठ ने वीर पाक्षिक षुरू किया।[4]

गाँधीयुग के दौरान भी जितने पत्र–पत्रिकाएँ निकले जैसे– चांद, माधुरी, सुधा, हंस, विषाल आदि सभी ने धर्म सम्बन्धी लेख, कविताएँ व टिप्पणियाँ अवष्य रहती थी। पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला व उनके सहयोगी द्वारा प्रकाषित 'मतवाला' (1923) के प्रथम अंक में ही नटराज भगवान षिव का ताण्डव करते हुए चित्र प्रकाषित हुआ। 'मतवाला' स्वामी विवेकानन्द के विचारों से प्रभावित रहा। इसमें उनके हिन्दू धर्म सम्बन्धी ओजस्वी विचारों का प्रमुख स्थान रहता था। प्रसिद्ध गीता प्रचारक व सनातनधर्मी विद्वान पं. राम गोविन्द त्रिवेदी ने कलकत्ता से 1926 में 'सेनापति' मासिक का सम्पादन किया। प्रथम अंक में ही सम्पादकीय टिप्पणी में धर्म रक्षा का आह्वान करते हुए कहा गया– 'मुट्ठी भर जीव हमारी नकेल पकड़कर हमें नचा रहे हैं। हमारे इस पतित जीवन पर हमारे पूर्वज स्वर्ग से आंसू बहा रहे होंगे।'[5] 'कल्याण' का प्रथम अंक सर्वथा षुद्ध आध्यात्मिकता के रंग में रंगा हुआ, संवत् 1983 वि. श्रावण कृश्ण एकादषी (अगस्त 1926) के दिन वेंकटष्वर स्टीम प्रेस में मुद्रित होकर सत्संग भगवन, बम्बई द्वारा प्रकाषित हुआ। कल्याण के प्रथम वर्श के बाहर साधारण अंकों का तथा दूसरे वर्श के प्रथम मास के विषेशाँक 'श्री भगवन्नामांक' का प्रकाषन बम्बई से ही हुआ। इसके बाद दूसरे वर्श के दूसरे अंक से 'कल्याण' का मुद्रण एवं प्रकाषन गीताप्रेस गोरखपुर से होने लगा। सस्ते मुल्य पर प्रमाणिक धार्मिक साहित्य विषेशतः 'गीता' को सुलभ कराने का जो महत्वपूर्ण कार्य गीताप्रेस ने किया है, वह प्रषंसनीय है। गीता और रामायण की लगभग चार करोड़ प्रतियाँ अब तक गीता प्रेस से निकल चुकी हैं। इसके अतिरिक्त अन्य औपनिशदिक, पौराणिक और धार्मिक साहित्य गीताप्रेस द्वारा प्रकाषित हुआ है। इसी गीताप्रेस से 'कल्याण' नामक हिन्दी मासिक का प्रकाषन सन् 1926 ई. प्रारम्भ हुआ जो आज अपने क्षेत्र में विष्व का अकेला मासिक पत्र है। 'कल्याण' के पाठकों की संख्या दुनिया के सभी देषों में है और इसे हिन्दू ही नहीं, बल्कि देष–विदेष के अन्य धर्मावलम्बी भी बड़ी श्रद्धा और जिज्ञासा से पढ़ते हैं। इस रूप में कल्याण का एक अंतराश्ट्रीय महत्व है।[6] इसके सम्पादक श्री हनुमान पोद्दार ने इस पत्रिका में धर्म–अध्यात्म के अतिरिक्त विज्ञापन या अन्य सामग्री को कभी भी कोई स्थान न देकर भारतीय धर्म संस्कृति के प्रति अपनी निश्ठा का परिचय दिया है।[7]

(2) आध्यात्मिक पत्रकारिता का स्वरूप –

कल्याण की भाँति ही मेरठ के एडवोकेट श्री दुर्गाप्रसाद जी ने 1932 में मासिक 'संकीर्तन' का प्रकाषन प्रारम्भ किया। प्रथम अंक में इसमें घोशणा की गई कि इस पत्र का उद्देष्य भक्ति, भगवन्नाम संकीर्तन का प्रचार, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, धर्म और सदाचार की प्रेरणा देना है। यह प्रधान सम्पादक के रूप में प्रथम पाँच वर्श तक स्वामी षिवानन्द सरस्वती के नाम प्रकाषित हुआ। इसी क्रम में 1934 में दिल्ली से सुदर्षन सिंह चक्र ने हिन्दू धर्म के प्रचार हेतु 'हिन्दू' का प्रकाषन किया। 1936 में गीता प्रचारक महामण्डलेष्वर स्वामी विद्यानन्द जी ने काषी से

'गीताधर्म' मासिक का प्रकाषन प्रारम्भ किया। 1939 में स्वामी करपात्री जी ने सनातन धर्मियों के संगठन 'धर्मसंघ' के प्रचार हेतु मासिक 'सन्मार्ग'[8] का प्रकाषन षुरू किया।

पं. श्रीराम षर्मा आचार्य ने अध्यात्मवाद के प्रचार दृश्टि से 1938 में मथुरा से 'अखण्ड ज्योति' मासिक का प्रकाषन प्रारम्भ किया।[9] तभी से यह ज्ञान गंगोत्री की धारा बनकर अपने कलेवर में विविधता भरे इतिहास को समेटे सतत् प्रवाहित है। इसका प्रकाषन 'अखण्ड ज्योति संस्थान' मथुरा से होता है। प्रारम्भ में सम्पादक आचार्य जी और सह सम्पादक थे– प्रो. रामचरण महेन्द्र एम. ए.। 1940 में पं. दीनानाथ 'भार्गव' द्वारा दिल्ली से मासिक 'मानव धर्म' का प्रकाषन षुरू हुआ 1941 में वृन्दावन से मासिक 'प्रेम संदेष' का प्रकाषन हुआ। 1941 में ही वैश्णव सम्मेलन द्वारा मासिक 'वैश्णव सम्मेलन' को प्रकाषित किया। 1946 में गीता मंदिर आगरा ने 'कर्मयोग' मासिक प्रारम्भ किया। 1946 में ही धर्मसंघ ने काषी से मासिक 'सिद्धान्त' का प्रकाषन प्रारम्भ किया।

1948 में वृन्दावन से 'भक्त भारत' 1949 में श्री मातृ केन्द्र गाजियाबाद से श्री अरविन्द के विचारों पर आधारित मासिक 'माता' का प्रकाषन। अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी से 'अदिति' नामक पत्रिका का प्रकाषन। 1949 में मुमुक्षु आश्रम (षाहजहाँपुर) से मासिक 'परमार्थ' का प्रकाषन। बनारस से 'श्रवण' मासिक तथा हरिनाम संकीर्तन महामण्डल अमृतसर द्वारा मासिक 'ईष्वर प्राप्ति' का प्रकाषन भी 1949 में प्रारम्भ हुआ। सनातन धर्म के विद्वान षास्त्रार्थ महारथी पं. माधवाचार्य षास्त्री ने 1960 में सनातन धर्म दिग्विजय मण्डल की ओर से मासिक 'लोकालोक' का प्रकाषन प्रारम्भ किया। 1964 में षक्ति सम्प्रदाय द्वारा मासिक 'भैरवी' का प्रकाषन षुरू हुआ। 1965 में मथुरा से 'श्रीकृश्ण संदेष' मासिक पत्र प्रकाषित हुआ। 1981 में गाजियावाद से 'धर्मदूत', गीता आश्रम दिल्ली से 'गुरू प्रसाद' मासिक, वृन्दावन से 'भगवद्दर्षन' का प्रकाषन आरम्भ हुआ। आर्य समाज 'आर्यमित्र' लखनऊ, 'सार्वदेषीक' दिल्ली, 'आर्य जगत्' तथा 'आर्य संदेष' साप्ताहिक पत्र प्रकाषित किया जो अभी भी जारी है। इसी प्रकार विष्वेष्वरानन्द संस्थान, साधु आश्रम होषियारपुर से आध्यात्मिक पत्रिका 'विष्व ज्योति' लगभग 40 वर्शों से प्रकाषित हो रही है। विष्व हिन्दू परिशद् की 'हिन्दू विष्व', काषी हिन्दू विष्वविद्यालय से 'श्रवण' मासिक का सफल प्रकाषन होता रहा है। इसके अतिरिक्त 'अणुव्रत' 'जैन भारती' बौद्ध धर्म के संदर्भ में 'धर्मदूत' मासिक, इसाई धर्म के प्रचार हेतु 'मसीही आवाज' उल उलमाये हिन्द की साप्ताहिक 'क्रान्ति' पत्रिका, आध्यात्मिक पत्रिका 'विष्वात्मा', 'श्री षंकराचार्य संदेष' मासिक पत्रिका आदि धर्म तथा अध्यात्म सम्बन्धी पत्र–पत्रिकायें हैं।[10]

वैसे धर्म, अध्यात्म विशयक् पत्र–पत्रिकाओं की संख्या डेढ़ हजार से अधिक हैं, जिनमें सर्वाधिक लगभग साढ़े तीन सौ हिन्दी भाशा में प्रकाषित होती है। इनका उद्देष्य धार्मिक तो होता ही है किन्तु प्रकारान्तर से ये सामाजिक सुधार की दिषा में प्रयत्नषील रहती है।[11]

हिन्दी भाशा का मूल्य इसी बात से आंका जा सकता है कि भारत ही नहीं, विष्व के अन्यान्य देषों में भी इसको सहज स्वीकार गया है। बद्रीनाथ तिवारी के अनुसार– 'आज संसार के एक सौ पैंतीस विष्वविद्यालयों में पठन–पाठन तथा षोधकार्य हिन्दी में हो रहे हैं।'[12] चीनी भाशा के बाद विष्व की दूसरी सबसे बड़ी भाशा हिन्दी है। इसके साहित्य तथा भाशा संवर्द्धन में विदेषी मनीशियों का भी कम योगदान नहीं है, जिन्होंने इसकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति को समझा और स्वीकार भी किया। सर्वप्रथम इटली के फ्लोरेंस विष्वविद्यालय में 'लुइजिपियो तैस्सी तोरी' ने सन् 1911 में 'वाल्मीकि रामायण और तुलसी रामायण का तुलनात्मक अध्ययन' विशयक् षोध किया।[13] इसके पष्चात् दूसरा हिन्दी में षोध कार्य सन् 1918 में डॉ. जे. एन. कार्पेटर ने लन्दन विष्वविद्यालय में किया, वह भी तुलसी सम्बन्धित 'तुलसी का धर्म दर्षन' षीर्शक था। संसार की हिन्दी ही वह भाशा है, जिसके षोधकार्य विदेषियों ने षुभारम्भ किया।'[14] और उसमें भी धर्म–अध्यात्म से जुड़े विशयों को ही महत्त्व दिया।

(3) आध्यात्मिक पत्रकारिता के आदर्ष –

भारतीय पृश्ठभूमि में तो आध्यात्मिक विशयों पर षोधकार्य की एक लम्बी श्रृंखला बनती गई है। जिसने यहाँ की धर्म अध्यात्म से जुड़ी साहित्य सामग्री को और अधिक प्रखर एवं प्रमाणिक बनाया है, परन्तु इसका मुख्य श्रेय यहाँ की आध्यात्मिक पत्रकारिता को जाता है, जिन्होंने इस क्षेत्र में षोध कार्यों और साहित्य सृजन हेतु प्रेरक विशय–वस्तु उपलब्ध करायी। अध्यात्म क्षेत्र के मूल तत्वों को धारण करने वाले आर्शसाहित्यों की लम्बे समय में रूढ़ियों–परम्पराओं में ग्रस्त धूमिल छवि को पुनः प्रकाषित करने में 19–20वीं सदी के राश्ट्रीय चेतना से युक्त धार्मिक आन्दोलन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर आध्यात्मिक पत्रकारिता को सुदृढ़ आधार प्रदान किया। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृश्ण मिषन, थियोसोफिकल सोसाइटी आदि ने भारत के धार्मिक पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।[15] इन्हीं से उद्बोधित होकर भारत के निवासियों ने 'स्वराज्य' और 'स्वतंत्रता' की प्राप्ति हेतु अहर्निष प्रयास किया। इस कार्य में भारतीयों की गतिविधियों को सदैव आगे बढ़ाने में हिन्दी के सभी पत्र–पत्रिका ऋग्वेद के 'यतेमहि स्वराज्ये' (हम स्वराज्य के लिए सदा यज करें) के उद्घोशक रहे।[16] इसी आध्यात्मिक आधार पर हिन्दी पत्रकारिता ने 'राश्ट्र जागृयां वयं' के षुभ संकल्प को मूर्तिमान करने का अविस्मरणीय कार्य किया।

हिन्दी पत्रकार श्री प्रकाष चन्द्र भुवालपुरी ने विविध उपमाओं द्वारा पत्रकारों के दायित्व बोध और महत्व को स्पश्ट किया है। वह साहित्यकार की तरह मधुवती बनकर जीवन के बिखरे हुए सत्य का मात्र संचयन ही नहीं करता, वरन् उसे देवर्शि नारद सा भ्रमणषील, संजय सा दूरदृश्टि सम्पन्न अर्जुन सा लक्ष्यनिश्ठ, एकलव्य सा अध्यवसायी, अभिमन्यु सा निर्भीक, परषुराम सा साहसी, सुदामा सा संतोशी, दधीची सा त्यागी, धर्मराज सा सत्यव्रती, भीश्म सा अडिग, गणेष सा प्रतिभा सम्पन्न, कृश्ण सा ज्ञानी एवं कर्मयोगी, राम सा मर्यादावादी, कृश्ण–द्वैपायन सा प्रगतिषील और भगवान षिव सा लोकमंगल के लिए विशपायी होना पड़ता है।[17] हिन्दी पत्रकारिता के स्वर्णिम इतिहास की रचना करने वाले पत्रकारों में उक्त उपमाओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत हुआ है। इस आध्यात्मिक धुरी पर ही हिन्दी पत्रकारिता को प्रत्येक क्षेत्र में विकसित करने तथा जन समाज तक पहुँचाने में सफलता प्राप्त की है।

(4) अखण्ड ज्योति की आध्यात्मिक पत्रकारिता –

अखण्ड ज्योति की मूल चिन्तनधारा विचारक्रान्ति में आचार्य जी इसी परिश्कृत दृश्टिकोण, उत्कृश्ट चिन्तन रूपी अध्यात्म की बात करते हैं। उनके षब्दों में, 'अध्यात्मवाद वह तत्व है जो मनुश्य के अंतःकरण में से भ्रश्ट आकांक्षाओं और ओछी मान्यताओं को हटाकर विषाल हृदय, उदार दृश्टिकोण एवं दूरदर्षिता की भावना क्षेत्र में प्रतिश्ठापना करता है। यह प्रतिश्ठापना ही मानवता का, महानता का, धार्मिकता का प्रतिनिधित्व करती है। इसको ही अपनाकर मनुश्य सच्चे अर्थों में मनुश्य बनता और मनुश्यता के आवष्यक सद्गुणों से सम्पन्न होता है।'[18] अखण्ड ज्योति का लेखन इसी अध्यात्मवाद की धुरी पर केन्द्रित है। इसकी प्राण चेतना में यही आध्यात्मिक जीवन दृश्टि घुली–मिली है। यह आध्यात्मिक दृश्टि उपासनात्मक क्रिया–कृत्यों तक ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक जीवन की वास्तविकता को भी गहरे तल पर स्पर्ष करती है। स्वयं आचार्य जी की उपासना पद्धति में जप–तप का जितना स्थान था, उससे हजार गुना महत्व वे जीवन–साधना को देते थे और अपनी आत्मिक उपलब्धियों का श्रेय वे आंतरिक कशाय–कल्मशों के उन्मूलन और बाह्य जीवन की आदर्षवादिता को देते थे। 'उन्होंने जब भी कहा, यही कहा– मेरी उपासना को फलित करने का श्रेय उस जीवन साधना को ही दिया जाना चाहिए, जिसमें अंतरंग की निर्मलता और बहिरंग की उत्कृश्टता को अविच्छिन्न रूप से जोड़ा और संजोया जाता रहा।'[19] अखण्ड ज्योति के माध्यम से यही प्रयास रहा कि ऐसा अध्यात्म यदि सर्वसाधारण की रूचि का विशय बन जाय और लोग उसे अपनाने में सर्वतोन्मुखी प्रगति अनुभव करने लगें तो निःसंदेह उत्कृश्टता की जीवन–साधना अपनाने का आकर्शण असंख्यों को होगा और फलस्वरूप महान व्यक्तित्वों का उपवन चारों ओर लहलहाने लगेगा।

पत्रिका के पाठकों को अध्यात्मवाद की महत्ता समझाते हुए आचार्य जी लिखते हैं कि– 'यही एक ऐसा दर्षन है जो वर्तमान आस्था संकट को टाल सकता है, टूटते व्यक्ति एवं बिखरते समाज को जोड़ सकता है। इसमें यदि व्यक्ति में देवत्व के उदय की सम्भावना है तो इस बात की भी पूरी–पूरी गुंजाइष है कि धरती पर स्वर्ग का अवतरण हो सके।'[20] अखण्ड ज्योति का जो आध्यात्मिक दर्षन है, उसकी आज के युग में असाधारण आवष्यकता है।[21] आदर्ष रूप में जिस नये समाज की रचना आज स्वप्न सी लगती है। विचारषीलता के जाग्रत होते ही वह मूर्तिमान होकर सामने खड़ी दीखेगी।[22] अध्यामवाद के अवलम्बन से ही जनमानस में परिश्कृत चिन्तन का संचार संभव है, जिससे कुछ आषाएँ, अपेक्षाएँ संभव है, अन्यथा किसी और माध्यम से पतन की द्रुतगति को रोकना असम्भव ही है। अखण्ड ज्योति का अध्यात्मवाद युग की इसी माँग को पूरा करता है। उसकी आध्यात्मिक जीवन दृश्टि में आदर्षवादी समाज की वह परिकल्पना प्रस्तुत की गई है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति न्यायनिश्ठ, परोपकारी, ईमानदारी स्तर पर अनेकों प्रतिकूलताओं और दबावों के आगे न झुककर अपनी आदर्षवादिता पर आरूढ़ रहते हैं।[23] पत्रिका ने अपने पाठकों को अपने जीवन में आदर्षवादिता को जीवित और जीवन्त बनाये रखने के लिए लोकश्रद्धा के जन सम्मान के दिव्य उपहार का भाव सुझाया है।[24]

आचार्य जी के अनुसार व्यक्ति और समाज की आस्था को स्पर्ष करने वाले यदि इस दर्षन को अंगीकार करें तो कोई कारण नहीं कि इससे वैयक्तिक चिन्तन में उत्कृश्टता और समाज में श्रेश्ठता न आ सके।[25] अखण्ड ज्योति में प्रस्तुत किया गया अध्यात्मवाद का व्यावहारिक स्वरूप है– संतुलन, व्यवस्था और औचित्य।[26] यह विधा चिन्तन एवं चरित्र में उत्कृश्टता का समावेष करने तथा व्यक्तित्व में पवित्रता–प्रखरता भर देने की सुव्यवस्था का दूसरा नाम है। अध्यात्मवादी साधनारत व्यक्ति उपार्जित या प्राप्त वैभव का उपयोग स्वयं ही नहीं करता है। वह औसत नागरिकों जैसा ही निर्वाह स्वीकार करता है, षेश को उदारतापूर्वक लोकमंगल के लिए हाथों–हाथ वापस कर देता है।[27] अधिकांष पाठकों के जीवन में यही तथ्य समाहित होता गया है। अखण्ड ज्योति के पाठक सदैव इसके अध्यात्मवादी सूत्रों से प्रेरणा लेकर उसी अनुरूप अपने आपको ढालने हेतु प्रयत्नषील रहा है। इसी का परिणाम है कि उनके माध्यम से समर्पित लोकसेवी के रूप में विराट संगठन अखण्ड ज्योति मिषन को सतत् गति प्रदान कर रहा है।

आध्यात्मिक पत्रकारिता में अखण्ड ज्योति की भूमिका इस तरह नहीं है। यह एक मासिक पत्रिका मात्र नहीं, बल्कि अपने प्रत्येक अंकों की अटूट श्रृंखला में निरन्तर बरसने वाली ज्ञान अमृतधारा है। जीवन को सर्वांगीणता में स्पर्ष करने वाला इसका आध्यात्मिक चिन्तन, इसकी क्रमबद्ध विशय–वस्तु जनमानस का ठीक जैसे ही मार्गदर्षन करती है, जैसे कोई अबोध बालक को प्रौढ़ बनाने के लिए अभिभावक जिस भूमिका को निबाहते हैं। अखण्ड ज्योति की विशय–वस्तु पाठक को ऐसे ही संरक्षण प्रदान करती हुई जीवन संग्राम में अनेकों कठिनाइयों, संघर्शों से बचाते हुए सतत् सफलता की ओर अग्रसर करती है।

निश्कर्श–

आध्यात्मिक चेतना की तपो ऊर्जा से ओतप्रोत अखण्ड ज्योति की विशय–वस्तु में जीवन तथ्यों को उकेरने, उनका समाधान प्रस्तुत करने में जहाँ एक ओर गहनता, और गम्भीरता प्रकट होती है, वहीं उसकी व्यावहारिकता का भी सार्थक समन्वय प्रस्तुत हुआ है। अपनी इसी विषेशता में इस पत्रिका ने आध्यात्मिक सूत्रों को वैज्ञानिकता के मापदण्ड से परिषोधित कर मौजूद परिस्थितियों के समक्ष प्रस्तुत कर अंधी आधुनिक जीवनषैली के लिए अध्यात्मवादी जीवनदृश्टि की अनिवार्यता का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत किया है। स्वार्थवाद, व्यक्तिवाद की कलुशित आँधी में प्रवेष करने वाले प्रयत्नषील समाज को अखण्ड ज्योति की पत्रकारिता ने सदैव आत्मकल्याण और लोककल्याण का सार्थक और सहज मार्ग ही सुझाया है। 'मनुश्य अपने भाग्य का निर्माता आप है' का संदेष देने वाले आचार्य जी कहते हैं कि मनुश्य जीवन महान है।[28] यह एक प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष है।[29] आचार्य जी के अनुसार हमारे प्रस्तुत जीवन की यात्रा अनन्त है। यह एक अविराम सतत् प्रवाह है।[30] हम वस्तुतः इस अनन्त जीवन का

एक अंष है।[31] अतः इस जीवन का सदुपयोग हमें इसी सच्चाई के साथ करना चाहिए। यदि इस दृश्टिकोण का जीवन में समावेष हो जाय तो सारी समस्याओं का समाधान सहज ही सम्भव हो जाता है। इसी दृश्टिकोण ने अखण्ड ज्योति की पत्रकारिता को प्रगतिषील बनाया है।

सन्दर्भ सूची–

1.सहारा समय, साप्ताहिक 10 जुलाई 2004–हाट में हिन्दी (अभय कुमार दुबे का लेख), पृ.–1
2.वही, पृ.–2
3.वही, हिन्दी की दुकानें अंग्रेजी का माल (प्रियदर्षन का आलेख)
4.डॉ. रमेष जैन– हिन्दी पत्रकारिता, विविध स्वरूप, पृ.–4
5.वही, पृ.–6
6.डॉ. विष्वनाथ प्रसाद तिवारी, पूर्वांचल, पृ.–52–53
7.डॉ. अर्जुन तिवारी– हिन्दी पत्रकारिता का बृहद् इतिहास, पृ.–281
8.डॉ. रमेष जैन– भारत में हिन्दी पत्रकारिता, पृ.–380
9.डॉ. रमेष जैन– हिन्दी पत्रकारिता विविध स्वरूप, पृ.–8
10. देखिये– डॉ. रमेष जैन– हिन्दी पत्रकारिता विविध स्वरूप, पृ.–10–12
11. संजीव भानावत– पत्रकारिता का इतिहास एवं जन संचार माध्यम, पृ.–136
12. कादम्बिनी मासिक, वर्श–40, अंक–8, पृ.–119
13. वही
14. वही, पृ.–119–120
15. डॉ. अर्जुन तिवारी– हिन्दी पत्रकारिता का बृहद इतिहास, पृ.–102
16. वही, पृ.–211
17. वही, पृ.–441
18. आचार्य श्रीराम षर्मा – अखण्ड ज्योति, वर्श 22, अंक 06, पृ. 33
19.पं. श्रीराम षर्मा आचार्य, वाड्.मय– युगद्रश्टा का जीवन दर्षन, पृ. 5.2
20.आचार्य श्रीराम षर्मा – अखण्ड ज्योति, वर्श 58, अंक 01, पृ. 12
21.पं. श्रीराम षर्मा आचार्य – समाज निर्माण, पृ. 31
22.आचार्य श्रीराम षर्मा – अखण्ड ज्योति, वर्श 25, अंक 02, पृ. 07
23.आचार्य श्रीराम षर्मा – अखण्ड ज्योति, वर्श 54, अंक 05, पृ. 24
24.पं. श्रीराम षर्मा आचार्य – हमारी युग निर्माण योजना, द्वितीय खण्ड, पृ. 52
25.आचार्य श्रीराम षर्मा – अखण्ड ज्योति, वर्श 58, अंक 01, पृ. 12
26.पं. श्रीराम षर्मा आचार्य – अध्यात्मवादी भौतिकता अपनायी जाय, पृ. 32
27.आचार्य श्रीराम षर्मा – अखण्ड ज्योति, वर्श 46, अंक 06, पृ. 05
28.आचार्य श्रीराम षर्मा – अखण्ड ज्योति, वर्श 36, अंक 03, पृ. 65
29.आचार्य श्रीराम षर्मा – अखण्ड ज्योति, वर्श 43, अंक 11, पृ. 01
30.आचार्य श्रीराम षर्मा – अखण्ड ज्योति, वर्श 52, अंक 02, पृ. 53
31.आचार्य श्रीराम षर्मा – अखण्ड ज्योति, वर्श 38, अंक 03, पृ. 65